प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

उर्द व मूंग की उन्नतशील प्रजातियों की ही खेती करें किसान

पंतनगर। ०७ जुलाई २०१८। खरीफ के मौसम में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में मूंग, उर्द का विशेष स्थान है। इनकी खेती करने से भूमि की उपजाऊ शक्ति में सुधार व पानी के कम प्रयोग जैसे अनेक फायदे हैं। देश में दालों की कमी को पूरा करने के लिए उर्द-मूंग का उत्पादन बढ़ाना अत्यन्त आवश्यक है। पंतनगर के कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के प्राध्यापक, डा. एस.के. वर्मा, के अनुसार उत्पादन बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक खेती के साथ-साथ किसानों द्वारा उन्नत किस्मों को अपनाना चाहिए। उन्होंने बताया कि पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा मूंग व उर्द की कई किस्में विकसित की गयी हैं। उर्द की किस्मों में एक किस्म है पंत उर्द-१९, जो देश के उत्तर-पूर्वी मैदानी भागों के लिए उपयुक्त है। यह ८०-८५ दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके दाने मध्यम आकार के काले होते हैं। इसकी पैदावार १२-१५ कुंतल प्रति हैक्टयर है। यह पीला चित्तवर्ण रोग के प्रति अवरोधी है। दूसरी किस्म, पंत उर्द-३०, देश के मध्य दक्षिणी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इसके गुण पंत उर्द-१९ जैसे ही हैं किन्तु, इसकी पैदावार १०-१२ कुंतल प्रति हैक्टयर है। पंत उर्द-३१ किस्म का दाना काला और पौधा सोयाबीन की तरह होता है। यह ८०-८५ दिनों में पककर तैयार हो जाती हैं। यह खरीफ के मौसम में उत्तराखण्ड के मैदानी तथा निचले पहाड़ी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इसकी पैदावार १०-१२ कुंतल प्रति हैक्टर है। यह भी पीला चित्तवर्ण रोग के प्रति अवरोधी है। वर्तमान में यह प्रजाति देश के लगभग सभी क्षेत्रों में उगाई जा रही है। पंत उर्द-३५ किस्म के पौधों की ऊंचाई लगभग १०० से.मी., पत्तियां गहरी हरी और परिपक्वता अवधि ८०-८५ दिन होती है। यह पीला चित्तवर्ण रोग के प्रति अवरोधी है तथा इसकी पैदावार १०-१२ कुंतल प्रति हैक्टर होती है। पंत उर्द-४० किस्म के पौधे सीधे और फलियां जमीन के स्तर से प्रारम्भ हो जाती हैं। यह ७५-८० दिन में परिपक्व होकर १२-१५ कुंतल प्रति हैक्टर उत्पादन देती है और यह विभिन्न रोगों के प्रति अवरोधी है। यह सहफसली फसल चक्र में सोयाबीन तथा मक्का के साथ उगाये जाने के लिए उपयुक्त है।

मूंग की किस्मों के बारे में बताते हुए डा. वर्मा ने कहा कि पंत मूंग २, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के मैदानी भागों के लिए उपयुक्त है। यह ७५-८० दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी उत्पादन क्षमता १०-१२ कुंतल प्रति हैक्टर है। इसके दानों का रंग चमकीला हरा होता है। यह पीला चित्तवर्ण रोग के प्रति अवरोधी है। दूसरी किस्म पंत मूंग-३, है जो भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी भागों के लिए उपयुक्त है। यह ७५-८० दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी पैदावार १२-१५ कुंतल प्रति हैक्टर है। इसके दानों का रंग हल्का हरा होता है। यह पीला चित्तवर्ण रोग व पत्ती बेधक तथा लाल धब्बे के प्रति अवरोधी है। पंत मूंग-४ किस्म दक्षिण-पूर्वी मैदानी भागों के लिए उपयुक्त है। यह ६५-७० दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी पैदावार १२-१५ कुंतल प्रति हैक्टर है। इसके दानों का रंग हल्का हरा होता है। यह पीला चित्तवर्ण रोग व पत्ती धब्बा रोग के प्रति अवरोधी है। इसकी पत्तियों का आकार बड़ा व हरे रंग का होता है। पंत मूंग-५ किस्म ७५-८० दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी पैदावार १२-१५ कुंतल प्रति हैक्टर है। इसके दानों का रंग चमकीला तथा दानों का आकार बड़ा होता है। पंत मूंग-७ उत्तरप्रदेश के लिए खरीफ तथा जायद के मौसम के लिए उपयुक्त है। यह देश के विभिन्न भागों में भी बोई जा सकती है। यह पीला चित्तवर्ण रोग के प्रति अवरोधी है। मूंग की एक अन्य किस्म पंत मूंग-६ है, जो देश के उत्तर-पूर्वी भागों के लिए उपयुक्त है। इसकी पैदावार १२-१५ कुंतल प्रति हैक्टर है। यह पीला चित्तवर्ण रोग, पत्ती बेधक तथा भूरे धब्बे के प्रति अवरोधी है। पंत मूंग-८ पीला मोजेक एवं चूर्णी फफूंदी रोग के लिए प्रतिरोधी है। यह सफेद मक्खी कीट के लिए भी प्रतिरोधी है। पंत मूंग-८ की परिपक्वता अवधि लगभग ८०-८५ दिन है। इसकी अपेक्षित उपज १२-१५ कुंतल प्रति हैक्टर है।

डा. वर्मा ने बताया कि खरीफ में बुवाई के लिए जुलाई के अन्तिम सप्ताह से अगस्त के प्रथम सप्ताह तक बुवाई की जा सकती है। पर्वतीय क्षेत्रों की घाटियों में मूंग और उर्द की बुवाई का उपयुक्त समय जून का द्वितीय पखवारा है तथा तराई-भावर एवं मैदानी क्षेत्रों में इसका समय जुलाई के तीसरे सप्ताह से अगस्त के प्रथम सप्ताह होता है। साथ ही उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि द्वारा खेती की जाये तो १०-१२ कुन्तल प्रति हैक्टर पैदावार प्राप्त की जा सकती है और ४० रूपये प्रति किलो की दर से विक्रय करने पर रू. ४८ हजार रूपये की आय और लागत रू. १०-१२ हजार निकाल देने पर शुद्ध लाभ रू. ३६ हजार प्रति हैक्टर सिर्फ ७०-८० दिन में प्राप्त होता है।